

सिको हि वक्तेकाव्यं पुष्पामोदमिवानिलः so v. a. *in die Weite führen, verbreiten* KATHÁS. 8, 10. *darbringen*: बलिम् Buág. P. 1, 13, 39, 3, 21, 16, 5, 1, 14, 6, 3, 13. भागम् 9, 3. *bringen* so v. a. *verschaffen, bewirken*: तेषां योगतेमं वक्ष्याम्यहम् Bhág. 9, 22. मनोवादेकवस्तुभिः । प्रेयसः परमां प्रीतिमुवाक् Buág. P. 9, 18, 47. डुःखनिवहम् 3, 9, 9. — 9) *wegführen*: (सरस्वती) वेगेनोवाक् तं विप्रं विश्वामित्राश्रमं प्रति MBu. 9, 2391. अद्रेः शृङ्गं वकृति पवनः किं स्वित् Megh. 14. तं (रेणुं) वक्त्यनिलः शीघ्रम् R. 2, 93, 14 (102, 16 GORR.). MĀRK. P. 17, 3. कुरुलक्ष्मीम् MBu. 1, 1796. उक्ष्माणः (जलेन) 9, 2886. जलेनोढम् vom Wasser fortgeschwemmt M. 8, 189. ऊढ fortgeschleppt, gerant 9, 270. — 10) *tragen*: पृष्ठेन MBu. 1, 5888. 6053. KATHÁS. 22, 140. स्कन्धेन Spr. 2764. 3924. मूर्ध्ना 2684. Megh. 17. शिरसा Spr. 1847. KATHÁS. 62, 115. मूर्ध्नि 114 (med.). Buág. P. 8, 20, 18, 9, 4, 54. BHATT. 14, 91. वतसि Spr. 592. हृदि KATHÁS. 56, 245. शृङ्गाध्वनं Buág. P. 3, 13, 40. तेषामहं पादमरोहरेणुम् — वक्ष्याधिकिरीटमायुः 4, 21, 42. मुखे निबद्धा निक्षतिम् Spr. (II) 876. धर्मराजं च धौम्यं च कृष्णं च यमज्ञा तथा । एको ऽप्यहमलं वोढुम् MBu. 3, 11019. fig. 4, 148. R. 3, 4, 26, 5, 33, 31. KATHÁS. 18, 170. 22, 142. यत्रारोहति जेतारो वकृति च पराजिताः ein Spiel Buág. P. 10, 18, 21. fig. वकृति शिविकामन्ये पात्यन्ये शिविकागताः Spr. 4699. Buág. P. 5, 10, 2, 6. खे खेलगामी तमुवाक् वाक्ः KUMĀRAS. 7, 49. खरवत् Spr. 4780. कर्भाणां सहस्राणि कोशं तस्य — ऊर्ध्वं MBu. 2, 1201. वाक्कैरुक्ष्माणां तो शूरैः R. 4, 24, 24, 5, 73, 48. गुह्यकैरुक्ष्माणां सा (सभा) MBu. 2, 385. उक्षते स्म सुपर्णेन RAGH. 10, 62. PĀNĀT. 198, 17. fig. वसुधा तथोक्ते येन BHATT. 2, 39. अङ्गाश्रयप्रणयिनस्तनयान्वकृतिः ÇĀK. 176. शरीरमेको वकृते ऽत्तरात्मा MBu. 12, 6917. गर्भम् eine Leibesfrucht tragen Spr. 1896. (नावः) वकृत्यो जनमावृढं तदा संपेतुराशुगाः R. 2, 89, 17. fig. (97, 22. fig. GORR.). तं जनमसत्यसंधं भावति वसुधे कथं वक्सि Spr. 484. Buág. P. 8, 20, 4. वकृति भुवनश्रेणीं शेषः Spr. 2763. अम्भोनिधिर्वकृति दुर्वक्वाडवाग्निम् 203, v. l. (II). KATHÁS. 28, 100. कार्यधुरम् MBu. 8, 1663 (med.). R. GORR. 2, 21, 12, 36, 14. भारं स वकृते तस्य Spr. 4919. BHATT. 3, 51. 15, 20 (भर्म् st. परम् Comm.). Buág. P. 5, 2, 11, 8, 6, 34. चिरोढा धुरम् RAGH. 18, 11. RĀGA-TAR. 3, 171. हृत्तम् Spr. 4891. चापम् Megh. 72. KATHÁS. 22, 92. (या मलका) वकृति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमानैर्मुक्ताजालय-धितमलकं कामिनीवाधवन्दम् Megh. 64. कतोक् कवचं वक्ष्माणाः P. 3, 2, 129, Schol. धर्मं वक्ष्न्वम् RĀGA-TAR. 3, 195. रक्ताश्रुकम् MĀRK. 10, 9. व-सत्तपुष्पाभरणम् KUMĀRAS. 3, 53. नानालिङ्गानि RĀGA-TAR. 4, 178. 1, 2. शिरः so v. a. *den Kopf hoch tragen* HARIV. 7103. शिरसि गर्वितान्यूरुः 8324. मूर्धानम् — उच्चैःतरां वहति शैलराजः KUMĀRAS. 7, 68. वसुधाराम्, ह्माम-एडलम् tragen so v. a. *regieren* RĀGA-TAR. 1, 101. 4, 119. अमुभिरुक्ष्माणाः von den Lebensgeistern getragen so v. a. *am Leben erhalten* Buág. P. 5, 26, 22. — 11) *ertragen*: मनोभवम् MĀRK. P. 18, 41. *ertragen* so v. a. *nachsehen, verzeihen* Buág. P. 5, 3, 15. — 12) *an sich tragen, haben*: पञ्चाशु-पातात्कलिलं वदनं वकृते MBu. 11, 43. वकृति हि धनकार्यं पण्यभूतं श-रीरम् MĀRK. 13, 15. पीयूषपूर्णकुचकुम्भयुग्मम् KAURAP. 26. वीरकायवक्-द्राक् KATHÁS. 47, 52. दशा बाष्पकलामुवाक् Buág. P. 4, 8, 16. वक्त्रिव रविप्रभाः RĀGA-TAR. 4, 197. — 13) *sich unterziehen, sich hingeben; an den Tug legen, äussern*: अग्निम्, विषम्, तुलाम् sich dem Gottesurtheil mit dem Feuer, dem Gift, der Wage unterwerfen JĀG. 2, 99 (vgl. Z. d. d. m. G. 9, 677, N.). वक्षाम सर्वे विवशा यस्य दिष्टम् Buág. P. 5, 1, 11. भ-

गवतो ऽनुशासनम् 20. दुर्वहं योगम् MBu. 13, 1918. मानुषीं दीताम् HARIV. 3733. नियमान् Buág. P. 3, 16, 7. सूर्याधिकारम् MĀRK. P. 111, 3. कपटम् MBu. 1, 3094. अथर्मम् R. 1, 23, 7. लज्जाम् Spr. 382 (II). खेदम् 368. पञ्चा-त्तापम् 3053. चित्तमेकाम् KATHÁS. 11, 7. 79, 10. निद्राम् Buág. P. 3, 9, 19. संरब्धिसिंहरुहत्तम् RAGH. 16, 16. प्रीतिम् HARIV. 4189. जीविताशाम् 8091. मानम् 8315. वाल्मह्यं केशवमयम् 8321. मानम्, मदनम्, मदम् 8433. धैर्यम् R. 5, 33, 41 (med.). शोभाम् Megh. 53. गर्वम् Spr. 826. द्विगुणरुचिम् 2026. निष्ठुरताम् 2417. कात्तिम् 3223. BHATT. 8, 49 (med.). मरुदुःखम् Ka-THÁS. 66, 143. प्रूरमानम् BHATT. 16, 5. परमेष्वाधर्मम् PĀNĀT. 218, 5. चरम् RĀGA-TAR. 4, 526. दत्तवातानुकारिताम् 1, 252. विफलश्रमत्वम् 4, 717. ऊ-ढास Buág. P. 2, 7, 25. ऊढवयस् = प्राप्तवयस् 4, 9, 66. — 14) *bezahlen*: मिथ्याभियोगी द्विगुणभियोगाद्धनं वक्ते JĀG. 2, 11. 292. — 15) *zubrin- gen* (eine Zeit): वक्तिः केनाप्युपायेन वक् तं नालिकाद्वयम् RĀGA-TAR. 4, 570. तत्राप्यहानि द्वित्राणि वक्त्रेवाभवत् 290. — 16) *वहन्* तन्महं स-हसा वहन् HARIV. 4433 fehlerhaft für जपन्, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. नवोढा, सहोढ, सूर्योढ.

— caus. वाक्यति, selten ०ते 1) *fahren lassen, (den Wagen) laufen lassen, lenken*: रथं वाक्य (सूत) मे शीघ्रम् MBu. 4, 1435. HARIV. 2433. 7300. 9339. R. 2, 114, 8 (123, 18 GORR.). 7, 28, 24, 29, 7. (die Pferde) zie- hen lassen, lenken: शनकैर्वः क्यन्क्यान् MBu. 7, 6421. 8, 688. मरुद्वयान् RĀGA-TAR. 4, 227. Schol. zu KĀT. Çu. 626, 2 v. u. वाक्यामास तान्पीन् liess sie (wie Zugthiere) ziehen MBu. 3, 469. 13, 4753. mit doppeltem acc. P. 1, 4, 52, VArtt. 7. वलीवर्दान्यवान् Schol. (zu Wagen) *Etwas führen*: अर्पितविमानवाक्तिकाश्चनकर्पूरवस्त्रकोटिचय KATHÁS. 43, 250. (ein Schiff) *führen, lenken*: नावम् MBu. 1, 2399. तरिम् 4014. Ohne acc. *fah- ren zu Wagen, sich mittelst eines Vehikels irgendwohin begeben*: त्र-रितं वाक्यताम् (impers.) wird dem Wagenlenker zugerufen R. 2, 40, 31. अघिष्ठाय च गी लोके भुञ्जते वाक्यसि च MBu. 12, 6705. अवाक्यंस्ततः (आधावत्तस्तदा die neuere Ausg.) शीघ्रं बाणस्य पुरमत्तिकात् HARIV. 10476. दन्तिणेन च मार्गेण सव्यं दन्तिणमेव च । वाक्यस्व मरुभाग ततो द्रव्यसि राघवम् ॥ R. 2, 92, 13 (in der ed. Bomb. wird ein Vers eingeschoben, so dass dort वाक्यस्व in der Bod. *führen* mit वाह्निन्म् zu verbinden ist). — 2) *Jmd lenken lassen*; mit dopp. acc.: वाहानवाक्यत्पार्थम् Vop. 3, 5. — 3) *Etwas tragen lassen* P. 1, 4, 52, VArtt. 3. भारं देवदत्तेन Schol. शैलान्वापिभिः Vop. 3, 5. उष्ट्रवामीशतवाक्तितार्थ RAGH. 3, 32. RĀGA-TAR. 3, 274. Z. d. d. m. G. 14, 371, 7. 372, 4. 8. Jmd tragen lassen, zum Tra- gen anstellen: पशुवच्चैव तान्पृष्ठे वाक्यामास MBu. 1, 3153. न वाक्येद्वि-जान् MĀRK. P. 34, 34. sich tragen lassen so v. a. *reiten auf* (acc.): तुर-गम् 121, 8. KATHÁS. 12, 135. ते वाक्यतो ऽन्योऽन्यम् HARIV. 3749. तं च मण्डुकैर्विमानं दृष्ट्वा PĀNĀT. 199, 3. 4. ह्यारोहेण वाक्कितां किशोरीम् R. GORR. 2, 123, 14. — 4) *tragen*; nur im pass. *getragen werden*: वक्तो वाक्यमानाश्च Buág. P. 10, 18, 22. वाक्यमानमयःखाटम् KĀM. NĪTIS. 11, 48. प्रतीपं कथ्यमाणो हि नोत्तरेऽत्तरैः । वाक्यमानो ऽनुकूलं तु जलोद्याद्य-सनात्तथा ॥ so v. a. *sich treiben lassend, getrieben werdend* Spr. 1843. अन्नद्ववाक्ति getrieben von RAGH. 19, 47. वाक्यमानस्य तृप्त्या Spr. 1440. — 5) *betreten*: स वाक्यते राजपथः शिवाभिः RAGH. 16, 12. वाक्येद्वशेषम् so v. a. *den Rest des Weges zurücklegen* Megh. 39. — 6) *Etwas in Be- wegung setzen, wirken —, arbeiten lassen*: सूनाः M. 3, 68. दश सूनास-